



# निर्माण IAS

996 1st Floor Mukherjee Nagar (Near Gandhi Vihar Bandh) Delhi-110009  
Ph.: 011-47058219, 9990765484, 9911581653, 9871968820

परीक्षार्थी का नाम/ Name of the Candidate: Sakshi Goel

रोल नं./ Roll No: ..... फोन नं./ Phone No: ..... 9871968820

दिनांक/ Date of Examination: .....

विषय/ Subject:

विश्व इतिहास

(दिनांक-21/09/2015)

प्रश्न संख्या Question No.	पूर्णक:- 120 अंक सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।	समय:- 90 मिनट	इस भाग में कुछ न लिखें (Don't write anything in this part)
-------------------------------	--	---------------	---

- प्रश्न 1. विचारक और लेखक क्रांति के कारण नहीं थे, किंतु उसका सह-परिणाम निश्चय ही था और उन शक्तियों के, जो फ्रांसीसी जीवन की बाह्य सतह के नीचे उमड़-घुमड़ रहे थे, प्रतिनिधि थे।  
(200 शब्द) (20 अंक)

फ्रांसीसी क्रान्ति विश्व की उन महान् घटाओं में से एक है, जिसमें सम्पूर्ण पुरोगति को एक नयी दशा विद्या दी भेदभावपूर्व पूर्ण नीति, असमानता, निरंकृतता व विशेषाधिकारों की प्राप्ति हेतु हृषी इस क्रान्ति में आमाधिक लैंगिक वर्ग की विशेष भूमिका बही ढलोत्तमीप है कि कोई भी क्रांति विचारक शक्ति में जन्म नहीं लेती तो फ्रांसीसी क्रान्ति इसका अपवाह कैसे हो सकती है।

माटेस्टपू जैसे महान्

विचारक ने 'शक्ति के धूपकुकशण' के सिद्धान्त पर बह दिया। न्यापपालिका, विधायिका व कार्पोपालिका को परम्पर एक दूसरे के प्रभाव से मुक्त करने वा विक्रमांकण का प्रसार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वहीं



निर्माण IAS

Ph.: 011-47058219, 9990765484, 9911581653, 9871968820

# U.P.S.C.

इसरी शोर वालेपर ने धर्म पर धृति किया। चर्चा की ही शारी मुस्तिलतों को ऐसा बताया त कष्ट कि धर्मनिषेद्धता के आधार पर ही इस सम्पूर्णता निकूञ्ज, दमनकारी व्यवस्था का अन्त किया जा सकता है कहा जाता है वालेपर की कलम से स्थाई नष्टि तिष्ठ मिहताथा है जिसमें क्रांति की सम्पूर्ण रुदीवारी, परम्परागत व्यवस्था को इस दिया। क्लना ही नहीं रसो जैसे महान विचारक ने 'धृति की शोर बोलो' का शिष्टाचल दिया। उसने जनता में पह भावना प्रेरित कर दी कि मनुष्य का धर्म स्वतंत्रता, समानता हेतु हुआ है उसे ज्यादा दिन तक शुब्दामी की अंधीरों में झकड़ कर जाए रखा जा सकता।

वार्षायिकों ने

यद्यपि कभी भी कान्ति की बात नहीं की, जो ही प्रत्यक्ष भाग दिया परन्तु दृश्यरूप व अप्रत्यक्ष रूप से ही उन्होंने एक प्रतिप्रिद्विल प्रवन्न किया व सम्पूर्ण क्रांति में 'समानता, स्वतंत्रता, बहुत्व के बारे का उद्घोष दीने लगा।

दीदा पद्मा  
करके  
को देते  
नाम

दृश्य  
उत्तमी की

exp:-



निर्माण IAS

Ph.: 011-47058219, 9990765484, 9911581653, 9871968820

# U.P.S.C.

प्रश्न 2.

अब तक नेपोलियन ने निरंकुश राजाओं को परास्त किया था, किंतु यैन में उसे ऐसे नागरिकों से लड़ा, जो राष्ट्रीयता की भावना से ओत-प्रोत थे और जिन्होंने अन्ततः नेपोलियन का साम्राज्य बाट कर दिया।

(200 शब्द) (20 अंक)

मुझ में लगातार विजयों से नेपोलियन की दृष्टि नापक के रख में उत्तरी व सांस्कृतिक जनता ने उसी प्रांत का क्षासक घोषित किया। अपनी धूम-धूल, क्रूटनीतिभूता, पश्चकम व ग्रैंड रम्पापर नीति से उसने प्रांत ही नहीं अधित सम्पूर्ण पूर्वोप में प्रभुत्व कापम कर लिया, परन्तु दूष ही राष्ट्र का राष्ट्र का चक्र पवत गया। यिशकी परिणति नेपोलियन के साम्राज्य के छन्ते के द्वारा में सामने आयी।

उल्लेखनीय है कि अपनी ग्रैंड रम्पापर नीति, महत्वाकांक्षी द्वेष के बहुत स्पेन में खुल्लो वेश का क्षासक चार जिसीसा नेपोलियन नफरत करता है था जाए ही रेन की गाँगोलिक परिणिति शैशी थी यिस पर

# U.P.S.C.

भाषिकार करने वह पिब्रात्र धर्म संघि के तहत श्री रामी  
से अङ्गीका से समर्पित बना सकता था। साथ ही उसकी  
महाकांशा ग्रंथ रम्यापद निमि व स्थेन का महाकीर्णीय  
व्यवस्था से सुकरना उत्क्रेष्ट का नाम कर दै ये श्री  
नेपोलिपन ने इसी आधार पर स्थेन के शासक की  
हत्या कर अपने भाई जोरोफ को वहां का राजा घोषित  
कर दिया।

परन्तु इसके विशेष में वहां की राष्ट्रवाद से  
ओत प्रीत धनता नेपोलिपन के शिकाफ हो उत्ति।  
नेपोलिपन का जामना यहा किसी राजा पा सेना से  
जहां धा अधित् राष्ट्रवाद से भा और राष्ट्रवाद को  
छोड़ना असम्भव होता है। इसके साथ ही सेन में  
रवाधाच की कमी, उनकी गुरुत्वा पद्धति ने नेपोलिपन  
की सेना को पश्चत कर दिया।

इस तरह राष्ट्रवाद के भागे नेपोलिपन  
जैसा महान सम्प्रद भी तिक न सका, नेपोलिपन ने  
स्वयं कहा है स्थेन के नास्तर ने मुझे बर्बाद कर  
दिया।

10

इप नारी  
को बदले

एक ने  
द्येन के  
कर वर  
कर जो  
प्राज्ञ  
द्विभा  
उत्तर द्येन  
न रखता

प्रबल  
पाद द्याए  
जाता का  
जाता



निर्माण IAS

Ph.: 011-47058219, 9990765484, 9911581653, 9871968820

# U.P.S.C.

इस भाग में  
कुछ न लिखें  
(Don't write anything in  
this part)

प्रश्न 3. फ्रांस क्रांति एक ऐसी जन क्रांति थी जिसका प्रारंभ कुलीन ने किया, नेतृत्व मध्यम वर्ग ने किंतु, अंत किया एक सैनिक तानशाह ने। (200 शब्द) (20 अंक)

~~प्रांसुसीसी क्रान्ति विश्व इतिहास की वह अविभाजित घटना थी जिसने सम्पूर्ण यूरोप के मानचित्र को बदल दिया। असमानता, भेदभावपूर्ण नीति, कर व दायित्व में अन्तर, निरंकुशा के विश्व-उष्ण इस क्रान्ति का प्रारम्भ तृतीय स्तर के छोबीन वर्ग ने किया, जो आर्थिक दृष्टि से तो सम्पन्न या पक्ष्मी पादरी समाज को साम्न अद्विकाशी से कंचित् धा।~~

~~नेशनल श्रीमती की होषणा फ्रांसियन  
बैने भवित्वान के मानवोषणा पत्र ने जहां एक श्रीमती की को शन्तुष्ट किया और वर्षी इसकी ओर  
किसान, मजबूत की स्थिति, अद्विकाशी में कोई विशेष  
परिकर्ता नहीं छुआ। असंतुष्ट होकर वह वर्ग क्रान्ति~~



# U.P.S.C.

नीति का  
उपचार करें  
हर मद्दृग  
कर्म के  
लक्षण  
निष्ठा

को इसी चरण में ले जाता है, जनतान्वे की स्थापना होती है व नेपोलियन, बिसेडिस्ट जैसे वर्गों की समृद्धि काप्रम हो जाता है। इसके आगे के परण में शासन की लागड़ी डाक्टरेकटी के हाथों में पहुंच जाती है। डाक्टरेकटी के

घष्ट, विरक्तुंश, उत्ताप्त शासन से प्रेरणा होकर जनता अन्ततः क्षांस की लागड़ी नेपोलियन के हाथ में सांप देती है। अपने सांस, ऊटनीतिशता के बन पर क्षंप नेपोलियन क्षांस की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक स्थिति में महत्वपूर्ण परिवर्तन करता है। क्षांस की आकृतिक सीमा निर्धारित करने के साथ ही धूम धूमाप में क्षांस का परम लक्षण देता है। परन्तु महाद्वीपीय व्यवस्था, एफ्फ युव्व व रसियन लोड़ जैसी दृष्टिकोणोंके सामाजिक अवस्था में निर्धारित भावित होती है अन्ततः नेपोलियन के साथ क्षांसीकी छान्ति का अन्त होता है।

1.3



# U.P.S.C.

प्रश्न 4. “मेरी वास्तविक गौरव मेरी चालीस युद्धों की विजयों में नहीं है; मेरी विधि सहिता ही ऐसी है, जो कभी न मिट सकेगी और चिरस्थायी सिद्ध होगा” - नेपोलियन (200 शब्द) (20 अंक)

कौशिका डीप के साधारण से परिवार में जन्मी नेपोलियन का क्षांस का नापक बनना, एक अभूतपूर्व घटना यही निपोलियन ने सांसारी क्षान्ति के दिन धारों को भरते हुए एक ऐसी व्यतरणा कापम की जिसने सभी कर्ता को संतुलित किया।

नेपोलियन ने भारातिक सेत में अनुशासन कापम करने हेतु सिविल कोड, पैनल कोड, वार्मिशिप कोड, कोड ऑफ क्रिमिनल सोसाइटी, कोड ऑफ जिविल प्रोसीजर की स्थापना की। पैतृक सम्पत्ति में अधिकार निश्चित किया। शिशा को भहतपूर्ण मानते हुए साधारिक से लेकर उच्च शिशा तक मूमितर्सी प्रमितर्सी का समेकन किया। धारों हेतु नि-हाल शिशा व धातवृत्ति की

दो का पुष्ट  
कर लाभका  
दर्द ५०  
३-५०

व्यवस्था की

प्रशासन के रेत में शैक्षिका, सब शैक्षिक सु  
की स्थापना की। सम्पूर्ण को मूल अधिकार दी जाए।  
किया। साथ ही आर्थिक रेत पर ध्यान दें ताकि उसे  
मुद्रा के अक्षयण पर बल दिया, भौतिकी पर बोक  
लगायी, 'हैंकं ओफ क्रांस' की स्थापना की।

नेपोलियन ड्वारा

फ्रांस की अस्थापी, अनुशासनकी विधानी व्यवस्था  
की इन सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक सुधारों द्वारा केवल  
आधार तदान किया गया था। पूरे पूरोष में फ्रांस का  
अधिकारीप राज्य के रूप में उभरा। औ नेपोलियन द्वारा  
किये गए सुधार आज भी कुछ भेंशेदारों के शाश  
फ्रांस में काप्त है। इस बात से इन संहिताओं,  
सुधारों की इच्छिता व महिला की भर्ती भाति  
समझा जा सकता है। मैट्रिक जैसे विचारों  
ने कहा था इन सुधारों, संहिताओं में समूर्द्ध गति  
का सारांश निहित है।

13



**निर्माण IAS**

Ph.: 011-47058219, 9990765484, 9911581653. 9871968870

# U.P.S.C.

यह चाहे में  
कुछ भी लिखें  
(Don't write  
anything in  
this part)

प्रश्न 5

फ्रांस की क्रांति बहाँ की पुरातन व्यवस्था में व्याप्त तमाम विकृतियों, विसंगतियों एवं बुनियादी दोषों के विरुद्ध एक सशक्त प्रतिक्रिया थी। (200 शब्द) (20 अंक)

शर्जननीति, आधिकारिक आसानता, गैदगातपूर्ण नीति, आधिकारीक व दापिल में व्याप्त आनंद त धिशेषाधिकारी की प्राप्ति हेतु हुपी क्षोभीभी क्रान्ति एक महान् हातना है जिसने मात् क्षोभ ही नहीं राम्फूर्ण भ्रोपांग इतिहास में महत्वपूर्ण परिवर्तन कर दिया।

क्षोभीभी क्रान्ति के कारण को समझेने हेतु बहाँ की परिस्थितियों को समझना आवश्यक है जाता है। भहाँ एक तरफ निश्चक्ष बाजतन्त्र या। राजा द्वारा कहा जाता था 'मैं ही कानून हूँ' वही द्वरारी शोर क्षोभ का समाप्तीम तरीं में विश्वलक्षण था। प्रथम व द्वितीय स्तेत में क्षमाश पादरी त रामन ये जिनेन आस सम्पूर्ण क्षोभ की ४०% जमीन ची, यसका दापिल

प्राप्त हुआ  
पर उनी  
जाने की



निर्माण IAS

Ph.: 011-47058219, 9990765484, 9911581653, 9871968820

# U.P.S.C.

ये कर भी नहीं देते थे। वही इसरी शौर तृतीय स्टेट में कूलीन कर्म, किसान, मणदुरी शामिल थे। यिनमें आप का ५३०. हिस्सा कर देने में चला जाता था। सामग्रि घरीदाने जैसे गनेकों अधिकारी से विचित्र ये शमाज में इसकी विषय निम्न श्रेणी में छोटी जाती थी क्षावत स्पष्टित एवं स्लोब में पादी पूजा करता है। सामन्त उम्मीद बड़ता है व सामन्य बनता कर देती है।

अत लोकसभी

वारश्या में उषा कुट के पास अधिकार ही शामिल थे। वहीं कुट के पात मात्र दायित। इसी अधिकार त दायित के अन्तर्न ने लोकों के तृतीय स्टेट नों उद्दीपित कर दिया और समूर्ण स्लोब में समानता, स्वतंत्रता, बन्धुत्व का नारा गेंग उष। रुक्षो वाल्टेपर ऐसे दार्शनिकों ने उत्तरेन की ग्रनिका निर्भया व ए समूर्ण छ काशणों की परिणामि १९७९ की लोकसभी शामिल के रूप में सामने आ गयी।

12

# U.P.S.C.

प्रश्न 6 महाद्वीपीय व्यवस्था एक असंभव व्यवस्था थी जिसे राज्यों ने विविशतावश स्वीकार किया और अवसर मिलते ही इसका परित्याग कर दिया, जो अन्ततः नेपोलियन के लिए आत्मघाती साबित हुई।

(200 शब्द) (20 अंक)

कोशिका ट्रीप के साधारण परिवार में घन्टमें नेपोलियन के का होम्मी का नापत्र बनता व सामाज्यविस्तार करना उसकी विधियों में निहित था। इन्हीं हुम्हों में विधियों के आधार पर उसने ग्रैंड रम्पाफर नीति की नींद रखी परन्तु इस नींद में बाधक बन रहे ब्रिटेन को परास्त करने के लिए अपनी सज्ज-बूझ के माँगिकता के आधार पर महाद्वीपीय व्यवस्था की घोषणा की।

ट्राइफलार के

पुष्ट में नेपोलियन को यह रहस्यास ही हुका था कि ब्रिटेन की नौ-सेना को इशाना मुश्किल है अतः उसे ब्रिटेन पर आर्थिक नाक्तेबन्धी का स्पास किया जिसका उद्देश्य ब्रिटेन की अर्थव्यवस्था की धराशाफी करने



निर्माण IAS

Ph.: 011-47058219, 9990765484, 9911581653, 9871968820

# U.P.S.C.

प्रश्न  
प्रश्न  
प्रश्न  
(Don't  
anything  
this part)

**हुश अन्ततः खिलेब को परासत करना था। रुम महाद्वीपीय वावस्या के तहत नेपोलिपन ने बर्मिं हाँगणा की व शादेश दिया कि कोई खिलेब के पाछाज नों फ्रांस के सम्बुल वाले विस्ती भी राज्य के बन्दरगाह पर उत्तरने नहीं दिया जाएगा। जिरारो इक तरफ फ्रांस के उद्योगों को संरक्षण मिलता रही इंसारी और खिलेब में मन्दी की स्थितित्वन हो जाती।**

**परन्तु इसके विरोध में खिलेब ने 'आर्डि आॅफ काउंसल' जारी कर दिया। साप ही खिलेब के पास बहुत ही शक्तिशाली नों - सैमा व उपनिवेश घे, जिसन सामना नेपोलिपन नहीं कर सकता था। फ्रांस के उद्योग भी उस भाष्टा व गुणवत्ता में उत्तापन न कर सके जिसकी उम्मीद थी। परिणामस्तर पर भूम्ब देश जो नेपोलिपन के साप मिलते सम्बद्ध बनाए हुए थे भाद्राद्वीपीय वावस्या का विरोध करने लगे, स्कंय नेपोलिपन ने चुंगी लगाकर फ्रांस में आपात की अनुमति देंदी और यह वावस्या असमर्थ हुयी।**

**गाहाद्वीपीय वावस्या तो असाक्षर हुयी परन्तु इसने ल मिस्र राज्यों को भी नेपोलिपन के विरुद्ध खड़ा कर दिया। स्पेन, ऐस्पेन, रसिप, बल्गार, आस्ट्रिया, प्रशा, ग्राक्रमणी अर्पित चारों भौम से नेपोलिपन द्वारा गया व अन्ततः फराहित हो गया। अर्पित महाद्वीपीय वावस्या उस द्वारा तत्त्वज्ञी गाहाद्वीपीय सिंह हुयी जिसने**



Name.....  
Roll No. ....

# U.P.S.C.

इस भाग में  
कुछ न लिखें  
(Don't write  
anything in  
this part)

~~विशेषज्ञी को तो चोटिल किया ही साप ही अपनों निर्माता  
को भी अधमरा कर दिया।~~

12



निर्माण IAS

1-47058219, 9990765484, 9911581653, 9871968820

13